

मोड्यूल 11 : जन्म के समय कम वज़न वाले / समय पूर्व जन्मे शिशुओं के खतरे की स्थितियों का निर्धारण तथा देखभाल

सत्र 4 : अधिक खतरे वाले शिशु

दिवस : 3

समयावधि : 2 घंटे

प्रयोजन

आशाओं को अधिक खतरे वाले शिशुओं पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इस सत्र में आशाओं को अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड, अतिरिक्त देखभाल और दौरे तथा माँ को शिशु की अतिरिक्त घरेलू देखभाल के बारे में सिखाया जाएगा।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी –

1. मापदण्डों के अनुसार पहचानना कि नवजात शिशु में अधिक खतरे के लक्षण तो नहीं हैं।
2. अधिक खतरे वाले शिशुओं की मापदण्डों के अनुसार देखभाल के बारे में बताना।
3. माँ को अधिक खतरे वाले शिशुओं की विशेष देखभाल के बारे में समझाना।

सामग्री

- अध्ययनपत्र 1 : अधिक खतरे के लक्षण, जानकारी प्रपत्र
- अभ्यासपत्र 1 : घरों का दौरा फॉर्म : अधिक खतरेवाले शिशु (पूरक फॉर्म 3)
- अभ्यासपत्र 2 : दूसरे महीने वाला घरों का दौरा फॉर्म (पूरक फॉर्म 4)
- अध्ययनपत्र 2 : अधिक खतरे वाले शिशु को पहचानने के लिए मापदण्ड
- अभ्यासपत्र 3 : प्रश्नपत्र
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1: प्रशिक्षकों के लिये प्रश्नपत्र के उत्तर
- ब्लैक बोर्ड या सफ़ेद कागज/ फ़िलप चार्ट
- मार्कर पेन

तैयारी

- अध्ययनपत्र 1,2 तथा अभ्यासपत्र 1,2,3, की आशाओं की संख्या के अनुसार प्रतियाँ तैयार रखें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति एवं चर्चा (1 घं.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. सत्र 3 में आशा को कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्मे शिशुओं की देखभाल के बारे में बताया गया था। आशाओं से पूछें कि ऐसे शिशुओं को 'अधिक खतरे वाले शिशु' क्यों माना जाता है। उनके उत्तर सुनें, जो कुछ ऐसे हो सकते हैं : कम वज़न वाले और समय से पूर्व जन्मे शिशु जल्दी बीमार

पड़ जाते हैं और यदि वे बीमार पड़ें तो सामान्य वजन और समय से जन्में शिशुओं की तुलना में इनकी मृत्यु की संभावना अधिक होती है।

2. उन्हें बताएँ कि किन शिशुओं को अधिक खतरा होता है यह जानने के लिए मापदण्ड निर्धारित किए गए हैं। विषय-वस्तु बाक्स में ये मार्गदर्शक दिये गये हैं। ब्लैकबोर्ड या कागज़ पर इन्हें लिखें।

विषय वस्तु

अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान के मापदण्ड

ऐसे शिशु जिनमें निम्न में से कोई लक्षण हों :

- जन्म के समय 2000 ग्रा. से कम वजन
- समय से पूर्व जन्में (8 माह 14 दिन या उससे कम गर्भकाल)
- पहले दिन ही बच्चे को स्तनपान संबंधी समस्या

3. यदि आशा प्रसव के समय उपस्थित नहीं है और उसे पहली बार शिशु के घर जाने में देरी हो जाए, तो जब भी वह पहली बार घर जाए, तो शिशु का वजन करे। ऐसे में निम्न तालिका का प्रयोग करते हुये निर्धारित करें कि शिशु को खतरा है या नहीं :

वह दिन जब शिशु का वजन पहली बार लिया गया	शिशु का वजन	निदान
1 से 14 दिन	2 कि.ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
15 से 21 दिन	2 कि.ग्रा. 100 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
22 से 27 दिन	2 कि.ग्रा. 200 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला
28वें दिन	2 कि.ग्रा. 300 ग्रा. से कम	अधिक खतरे वाला

4. आशाओं से पूछें कि अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान करना क्यों जरूरी है ? उनके उत्तर सुनें और सही उत्तरों की प्रशंसा करें। उत्तरों में निम्न बातें शामिल होनी चाहिए :
 - स्वस्थ शिशुओं की तुलना में खतरे वाले शिशु जल्दी बीमार पड़ जाते हैं और उनकी मृत्यु की संभावना भी अधिक होती है।
 - अधिक खतरे वाले शिशुओं को ठंड जल्दी लग जाती है और इसलिए उन्हें गर्म रखने की ज़रूरत होती है।
 - अधिक खतरे वाले शिशुओं को दूध पीने में कठिनाई होती है। स्तनपान शुरू कराने और जारी रखने में उन्हें सहायता देनी पड़ती है।
5. ऊपर दिए कारणों की वजह से यह बहुत जरूरी है कि अधिक खतरे वाले शिशुओं की पहचान की जाए, उनकी देखभाल की जाए और इलाज या बचाव के प्रयत्न शीघ्र किए जाएँ।

विषय वस्तु

अधिक खतरे वाले शिशुओं के लिए सावधानियाँ :

- ✓ प्रसव के बाद शिशु के घर के दौरे बढ़ाएँ। शिशु की जाँच के लिए पहले महीने में 13 बार घर जाएँ: 2,3,4,5,6,7,9,12,15,18,21,24,28 वे दिन तथा 42 वें दिन। (पूरक फॉर्म 3: 'घरों का दौरा फॉर्म: अधिक खतरेवाले शिशु' का प्रयोग करें।)
- ✓ 7, 15, 21, 28 और 42 वें दिन शिशु का वज़न करें।
- ✓ परिवार के सदस्यों को 'अधिक खतरे वाले शिशु' नामक शीट बाँटें और शिशु की जो विशेष देखभाल आवश्यक है, उस के बारे में बताएँ।
- ✓ समस्याओं के अनुसार विशेष देखभाल करें और शीतकाल में सामान्य रूप से शिशु को गर्म रखें (गर्म थैली, टोपी, कपड़ों का प्रयोग) और उसे थोड़ी-थोड़ी देर बाद (2-2 घंटे में) स्तनपान कराएँ।
- ✓ यदि शिशु ठीक से स्तनपान नहीं कर रहा, तो उसे दूध पीते हुए देखें। देखें, कि उसे ठीक स्थिति में स्तनों से लगाया गया है। माँ को ठीक से दूध पिलाने के बारे में समझाएँ/प्रेरित करें। उसे अन्य तरल पदार्थ/ऊपरी दूध देने से रोकें।
- ✓ 'अधिक खतरे वाले शिशु' शीट में दी गई जानकारी के बारे में मातापिता के साथ चर्चा करें
- ✓ यदि 28 वें दिन शिशु का वज़न 2300 ग्रा. से कम हो, अथवा 28 दिनों में शिशु का वज़न 300 ग्राम से कम बढ़ा हो, तो आशा दूसरे महीने भी सप्ताह में 1 बार शिशु की जाँच के लिये घर जाए और वज़न लें। (जिन शिशुओं का वज़न 28 वें दिन 2300 ग्रा. से कम होता है उन्हें मृत्यु का खतरा अधिक होता है)
- ✓ दूसरे महीने में दूसरा 'घरों का दौरा फॉर्म'— पूरक फॉर्म 4 भरे, 35, 42, 49 और 56वें दिन शिशु की जाँच के लिए जाएँ। यदि शिशु को दूसरे महीने में खतरा नहीं है तो आशा 42 वें दिन का नियमित दौरा करें।

6. दूसरे महीने वाला फॉर्म देखें; आशाओं को अवश्य बताएँ कि दूसरे महीने में, कब उन्हें शिशु की जाँच के लिए जाना है (28वें दिन वज़न 2300 ग्रा. से कम अथवा 28 दिनों में शिशु का वज़न 300 ग्राम से कम बढ़ा हो तो)। प्रशिक्षणार्थियों से कहें की यदि वे दूसरे महीने में खतरेवाले शिशु की जाँच के लिए जा रही है, तो वह शिशु की बीमारियों का उपचार भी करेगी।
7. आशाओं से कहें कि वे से अधिक खतरे वाले शिशु के लिए परामर्श कार्ड — नं.28, 29, 30, देखें। (नीचे दिया बाक्स देखें)। इस कार्ड में दी विषय-वस्तु देखें। इस कार्ड का प्रयोग प्रत्येक खतरे वाले शिशु की माँ के साथ करना चाहिए।

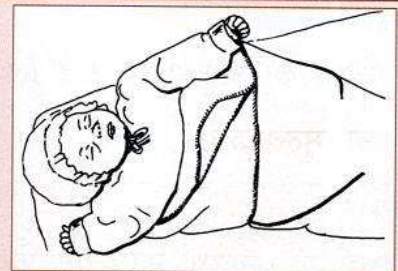
विषय-वस्तु

परामर्श (परामर्श कार्ड नं. 28, 29, 30)

आपके शिशु को विशेष सहायता की आवश्यकता है

- ✓ उसे गर्म रखना आवश्यक है। (विशेषकर ठंड के मौसम में)
- ✓ उसे पोंछकर, गर्म थैली में टोपी पहनाकर और अपने शरीर की त्वचा से चिपकाकर रखना चाहिए।
- ✓ समय से पूर्व जन्मे बहुत छोटे शिशु को गर्म रखने के लिए अपनी छाती के बीचों बीच चिपकाकर रखना चाहिए।

- ✓ सभी छोटे शिशुओं को 2-2 घंटे पर स्तनपान कराना चाहिए।
- ✓ जब तक शिशु का वज़न 2000 ग्राम से अधिक न हो जाए, उसे नहलाएँ नहीं।
- ✓ अपने हाथ कई बार धोएँ : अपने नाखून छोटे रखें और स्तनपान कराने से पहले, शौच जाने के बाद और शिशु को छूने से पहले प्रत्येक बार हाथ धोएँ।

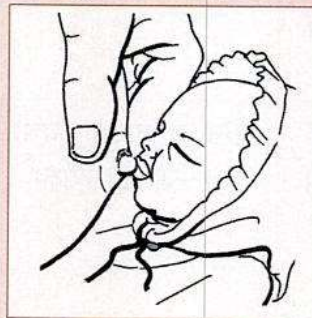


ठंड के मौसम में शिशु को गर्म रखें

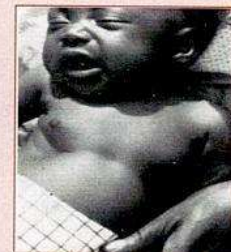
खतरे के लक्षण :

- ✓ यदि निम्न में से कोई भी खतरे के लक्षण शिशु में दिखाई दें तो आशा को तुरंत बुलाएँ:

- हाथ पैर लुंज-पुंज हो
- स्तनपान करना बंद कर दे
- छाती अंदर को धँसी हो
- बुखार हो
- छूने में ठंडा पड़ा हो



स्तनपान करना बंद



छाती अंदर को धँसना

8. आशाओं को बताएँ कि ऊपर दिए हुए खतरे के लक्षण, 10 में से 3 शिशुओं में आने की संभावना होती हैं। आशा जानती हैं कि शिशु ठंडा पड़ा हो (हायपोथर्मिया) या शिशु को बुखार हो तो इसका निदान और उपचार कैसे करना है। यदि शिशु के हाथ पैर लुंज-पुंज हो, या शिशु दूध पीना बंद कर दे, तो आशा ऐसे शिशुओं को तुरंत अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र भेजे। अगले मोड्यूल में वे सीखेंगे कि इनमें से कुछ शिशुओं का सेप्सिस के लिए निदान और उपचार कैसे किया जाता है।

भूमिका नाटक : (20 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. दो आशाओं से एक भूमिका नाटक प्रस्तुत करने को कहें; एक माँ की भूमिका निभाए, जिसने अभी-अभी कम वज़न वाले (अधिक खतरे वाले) शिशु को जन्म दिया है, और दूसरी आशा की भूमिका निभाए। आशा परामर्श कार्ड की सहायता से माँ को अधिक खतरे वाले शिशु की देखभाल करना सिखाए।
2. भूमिका नाटक के बाद सभी को बताएँ कि उनकी भूमिका कैसी रही; अच्छी बातों की प्रशंसा करें और सुधार के लिए सलाह दें।

प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन : परीक्षा (40 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. मूल्यांकन के लिए अभ्यासपत्र 3: प्रश्न-पत्र बाँटें।
2. आशा स्वयं प्रश्न हल करें। (30 मि.)
3. उत्तर पुस्तिकाएँ इकट्ठी करें और कक्षा में चर्चा करें।
4. प्रश्न पूछें; सभी की शंकाओं का समाधान करें।

सारांश

- परीक्षा की समीक्षा ही सत्र (तथा मोड्यूल) का सारांश हैं।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
मापदण्डों के अनुसार पहचानना कि नवजात शिशु में अधिक खतरे के लक्षण तो नहीं हैं।	प्रश्न-उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा द्वारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न-पत्र, जिसे जाँचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये हैं
अधिक खतरे वाले शिशुओं की मापदण्डों के अनुसार देखभाल के बारे में बताना।	प्रश्न-उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा द्वारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न-पत्र, जिसे जाँचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये हैं
माँ को अधिक खतरे वाले शिशुओं की विशेष देखभाल के बारे में समझाना।	भूमिका नाटक/चर्चा प्रश्न-उत्तर/परीक्षा	प्रत्येक आशा द्वारा हल किया गया अभ्यासपत्र 3 प्रश्न-पत्र, जिसे जाँचकर प्रशिक्षक ने अंक दिये हैं। प्रशिक्षक द्वारा लिखा गया भूमिका नाटक के निरीक्षण का विवरण